

वाल्टर गिनीज, मोयन के पहले बैरन की हत्या: फिलिस्तीन संघर्ष में एक निर्णायक मोड़

6 नवंबर 1944 को, काहिरा की सड़कें एक चौंकाने वाले राजनीतिक हिंसा के कार्य का मंच बन गईं, जिसकी गूंज पूरे मध्य पूर्व और उससे आगे तक फैल गई। वाल्टर एडवर्ड गिनीज, मोयन के पहले बैरन, मध्य पूर्व में ब्रिटिश निवासी मंत्री, यहूदी उग्रवादी समूह लेही (जिसे स्टर्न गैंग के नाम से भी जाना जाता है) के दो सदस्यों द्वारा हत्या कर दी गई। इस साहसिक कार्य ने न केवल एक प्रमुख ब्रिटिश राजनेता की जान ली, बल्कि एक यहूदी राज्य की संभावित राह को भी पटरी से उतार दिया और फिलिस्तीन में पहले से ही अस्थिर संघर्ष को और तीव्र कर दिया। लॉर्ड मोयन की हत्या ब्रिटिश औपनिवेशिक नीति, ज़ायोनी उग्रवाद और फिलिस्तीन पर नियंत्रण की लड़ाई के इतिहास में एक महत्वपूर्ण क्षण बनी हुई है।

व्यक्ति: वाल्टर गिनीज, मोयन के पहले बैरन

वाल्टर एडवर्ड गिनीज, मोयन के पहले बैरन (1880-1944), एक प्रमुख ब्रिटिश राजनेता, व्यवसायी, सैनिक और एंग्लो-आयरिश गिनीज ब्रूइंग परिवार के सदस्य थे। 29 मार्च 1880 को डबलिन, आयरलैंड में जन्मे, वे एडवर्ड गिनीज, इवेघ के पहले अर्ल के तीसरे पुत्र थे, जो धनी और प्रभावशाली गिनीज वंश के उत्तराधिकारी थे। ईटन कॉलेज में शिक्षित, उन्होंने नेतृत्व भूमिकाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, प्रतिष्ठित “पॉप” सोसाइटी के प्रमुख और नौकायन टीम के कप्तान रहे। 1903 में उन्होंने लेडी एवलिन हिल्डा स्टुअर्ट एस्काइन से विवाह किया, जो बुकन के 14वें अर्ल की बेटी थीं। दंपति के तीन बच्चे थे, जिनमें उनके उत्तराधिकारी ब्रायन गिनीज, मोयन के दूसरे बैरन शामिल थे, जो बाद में कवि और उपन्यासकार बने।

मोयन की विशेषाधिकार प्राप्त परवरिश ने उनकी कर्तव्यनिष्ठा को कमजोर नहीं किया। समकालीनों द्वारा बुद्धिमान, ईमानदार और सार्वजनिक हितैषी के रूप में वर्णित, उन्होंने अपना जीवन सैन्य और राजनीतिक सेवा को समर्पित किया। उनकी विशाल पारिवारिक संपत्ति—लगभग तीन मिलियन पाउंड अनुमानित—ने उन्हें प्रभाव और स्वतंत्रता प्रदान की, जिसका उपयोग उन्होंने कृषि, आवास और औपनिवेशिक नीति में सुधारवादी हितों को आगे बढ़ाने के लिए किया।

सैन्य सेवा

गिनीज की सैन्य करियर दूसरी बोअर युद्ध (1899-1902) के दौरान शुरू हुई, जब उन्होंने इम्पीरियल येओमेनरी में स्वयंसेवक के रूप में सेवा की, युद्ध में घायल हुए और क्वीन साउथ अफ्रीका मेडल प्राप्त किया। प्रथम विश्व युद्ध में उन्होंने मिस्र, गैलीपोली और फ्रांस में लड़ाई लड़ी, लेफ्टिनेंट कर्नल की रैंक तक पहुंचे। वीरता के लिए दो बार डिस्टिंग्विश्ड सर्विस ऑर्डर (DSO विद बार) से सम्मानित, उन्होंने मध्य पूर्व के प्रति आजीवन लगाव विकसित किया। उनके युद्ध डायरियां, 1987 में प्रकाशित, एक चिंतनशील सैनिक को प्रकट करती हैं, जिसके पास मानवता और इतिहास की गहरी समझ थी—एक ऐसा व्यक्ति जो साम्राज्य को कर्तव्य और बोझ दोनों मानता था।

राजनीतिक करियर

फ्रंट से लौटने के बाद गिनीज ने कंजर्वेटिव राजनेता के रूप में सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। उन्होंने लंदन काउंटी काउंसिल (1907-1910) में सेवा की और 1907 से 1931 तक बरी सेंट एडमंड्स के लिए सांसद रहे। लगभग तीन दशकों के करियर में उन्होंने कई प्रभावशाली पद संभाले: युद्ध के लिए अंडर-सेक्रेटरी ऑफ स्टेट (1922-1923), ट्रेजरी के फाइनेंशियल सेक्रेटरी (1923-1925), और कृषि और मत्स्य पालन मंत्री (1925-1929), जहां उन्होंने चुकंदर की खेती और ग्रामीण आधुनिकीकरण को बढ़ावा दिया।

1932 में मोयन बैरन के रूप में पीयरेंज में ऊंचा उठाया गया, उन्होंने हाउस ऑफ लॉर्ड्स में सेवा जारी रखी। उन्होंने प्रमुख सार्वजनिक जांचों में योगदान दिया, जिसमें 1933 की स्लम क्लियरेंस कमेटी, 1934 की डरहम यूनिवर्सिटी पर रॉयल

कमीशन, और 1938 की वेस्ट इंडीज रॉयल कमीशन शामिल हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, मोयन कृषि मंत्रालय के संयुक्त संसदीय सचिव (1940-1941), कॉलोनीयों के लिए स्टेट सेक्रेटरी और हाउस ऑफ लॉर्ड्स के नेता (1941-1942), और अंत में मध्य पूर्व में निवासी मंत्री (1942-1944) के रूप में सरकार में लौटे। इस क्षमता में, उन्होंने लीबिया से ईरान तक के क्षेत्रों में ब्रिटिश रणनीति की देखरेख की और क्षेत्र में विंस्टन चर्चिल के वरिष्ठ प्रतिनिधि के रूप में सेवा की।

व्यवसाय और अन्य प्रयास

गिनीज ब्रूअरी के निदेशक के रूप में, मोयन ने परिवार के व्यवसाय की वैश्विक विस्तार में भूमिका निभाई। उन्होंने बैंकूवर में ब्रिटिश पैसिफिक प्रॉपर्टीज की सह-स्थापना की और 1939 में खोले गए लायंस गेट ब्रिज के निर्माण का कमीशन दिया। एक परोपकारी के रूप में, उन्होंने लंदन और डबलिन में आवास ट्रस्टों को वित्तपोषण में मदद की ताकि कामकाजी परिवारों की स्थिति सुधारी जा सके।

मोयन की जिज्ञासा और साहसिकता ने उन्हें राजनीति और वाणिज्य से परे ले जाया। एक उत्साही यॉटमैन और खोजकर्ता, उन्होंने कई परिवर्तित यॉट्स—आर्फा, रैसल्का, और रोजौरा—के मालिक थे और प्रशांत और हिंद महासागरों में अभियान चलाए। 1935 में उन्होंने ब्रिटेन में पहला जीवित कोमोडो ड्रैगन लाया, और उनकी प्राणी और नृवंशविज्ञान संग्रह बाद में संग्रहालयों को दान कर दिए गए। उन्होंने **वाँकअबाउट: ए जर्नी बिटवीन द पैसिफिक एंड इंडियन ओशन** (1936) और **अटलांटिक सर्कल** (1938) लिखीं, किताबें जो नृविज्ञान और अंतर-सांस्कृतिक समझ में उनकी रुचि को प्रकट करती हैं।

ऐतिहासिक संदर्भ: मध्य पूर्व और फिलिस्तीन संकट

वाल्टर गिनीज, मोयन के पहले बैरन की हत्या, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश फिलिस्तीन मंडेट में बढ़ते तनावों के बीच हुई। 1942 से मध्य पूर्व में ब्रिटिश निवासी मंत्री के रूप में, मोयन ब्रिटेन के साम्राज्य और तेल आपूर्ति के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र में युद्ध रणनीति की देखरेख के लिए जिम्मेदार थे। इसमें 1939 के श्वेत पत्र को लागू करना शामिल था, जिसने फिलिस्तीन में यहूदी आप्रवासन को गंभीर रूप से प्रतिबंधित किया—प्रति माह 1,500 आप्रवासियों तक सीमित।

योजना और अपराधी

ब्रिटिश निवासी मंत्री की हत्या का विचार लेही के संस्थापक अब्राहम “याइर” स्टर्न से उत्पन्न हुआ, जिन्होंने इसे ब्रिटेन की साम्राज्यवादी प्रणाली के खिलाफ प्रतीकात्मक प्रहार के रूप में देखा। 1942 में स्टर्न की मृत्यु के बाद, योजना को नए लेही नेतृत्व के तहत पुनर्जीवित किया गया, जिसमें यित्ज़ाक शमीर—इज़राइल के भविष्य के प्रधानमंत्री—शामिल थे। दो युवा फिलिस्तीनी यहूदियों, एलियाहू हकीम (19 वर्ष) और एलियाहू बेट-जुरी (22 वर्ष), को मिशन को अंजाम देने के लिए चुना गया। इस जोड़ी को न केवल उनकी प्रतिबद्धता के लिए चुना गया, बल्कि फिलिस्तीन के बाहर एक हमले के माध्यम से यहूदी कारण के लिए अंतरराष्ट्रीय ध्यान आकर्षित करने की उनकी क्षमता के लिए भी—लेही की पहली विदेशी ऑपरेशन। लेही ने जानबूझकर मोयन को एक उच्च-रैंकिंग, आयरिश-जन्मे ब्रिटिश अभिजात वर्ग के रूप में निशाना बनाया, जिनकी मृत्यु पूरे साम्राज्य में गूंजेगी। योजना में, समूह ने हत्या की क्षमता पर जोर दिया कि यह यहूदी पीड़ा को नाटकीय बनाए, ब्रिटिश प्राधिकार को चुनौती दे और ज़ायोनी संघर्ष को वैश्विक उपनिवेश-विरोधी अभियान का हिस्सा दिखाए।

हत्या: एक सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध हमला

6 नवंबर 1944 की दोपहर के शुरुआती समय में, हकीम और बेट-जुरी काहिरा के गेज़ीरा द्वीप पर मोयन के निवास के पास इंतजार कर रहे थे। लगभग 1:10 बजे, मोयन की कार आई, जिसे लांस कॉर्पोरल आर्थर फुलर चला रहे थे और जिसमें उनकी सचिव डोरोथी ऑसमंड और सहायक-डे-कैंप मेजर एंड्रयू ह्यूजेस-ऑनस्लो थे। हत्यारे साइकिल पर आए। बेट-जुरी ने फुलर को सीने में गोली मारकर तुरंत मार डाला। हकीम ने कार का दरवाजा खोला और मोयन पर तीन गोलियां चलाई: एक ने उनकी गर्दन को कॉलरबोन के ऊपर मारा, दूसरी ने पेट को—कोलन को छेदते हुए और रीढ़ के पास फंस गई—और तीसरी ने उनकी उंगलियों और छाती को चर दिया। मोयन को ब्रिटिश सैन्य अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उसी दिन बाद में 64 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई। हमलावर भाग गए लेकिन मिस्र की पुलिस द्वारा पीछा किया गया। संक्षिप्त गोलीबारी के बाद, उन्हें पकड़ लिया गया और गुस्साए दर्शकों द्वारा लगभग लिंग कर दिया गया इससे पहले कि उन्हें गिरफ्तार किया गया। फोरेंसिक विश्लेषण ने बाद में उनके हथियारों को ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफ लेही की पिछली ऑपरेशनों से जोड़ा।

तत्काल परिणाम

हत्या ने दुनिया को झकझोर दिया और सुर्खियां बटोरीं। ब्रिटिश अधिकारियों ने अशांति के डर से यहूदी समुदाय के खिलाफ बड़े पैमाने पर प्रतिशोध से परहेज किया, लेकिन पूरे मध्य पूर्व में सुरक्षा मजबूत की। मिस्र में, लेही प्रचार के विपरीत, कोई तत्काल लेही-समर्थक प्रदर्शन नहीं हुए, हालांकि एक साल बाद, नवंबर 1945 में, काहिरा और अलेक्जेंड्रिया में यहूदी-विरोधी दंगे भड़क उठे, जिसके परिणामस्वरूप कई मौतें और व्यापक संपत्ति क्षति हुई। ब्रिटिश खुफिया ने कॉपीकैट हमलों की संभावना की चेतावनी दी—एक चिंता जो फरवरी 1945 में मिस्र के प्रधानमंत्री अहमद माहेर की हत्या के साथ साकार हुई। घटना से प्रभावित लोगों में एक युवा मिस्री अधिकारी गमाल अब्देल नासर थे, जिन्होंने कथित तौर पर हत्यारों के साहस और उपनिवेश-विरोधी दृढ़ संकल्प की प्रशंसा की।

मुकदमा और फांसी

हकीम और बेट-जुरी का जनवरी 1945 में मिस्री सैन्य अदालत में मुकदमा चला। उन्होंने कार्यवाही का उपयोग अपने कार्यों को राष्ट्रीय मुक्ति के लिए वैश्विक संघर्ष का हिस्सा बताते हुए जोशीले भाषण देने के लिए किया। उन्होंने मिस्र की अपनी क्रांतिकारी इतिहास पर साहित्य मांगा और अपनी वजह को भारत और आयरलैंड में साम्राज्य-विरोधी आंदोलनों से तुलना की। दया की व्यापक अपीलों के बावजूद—यहूदी समुदायों, अंतरराष्ट्रीय बुद्धिजीवियों और यहां तक कि एक भारतीय गांधीवादी से, जिन्होंने उन्हें जॉन ब्राउन और आयरिश रिपब्लिकनों से तुलना की—उन्हें मौत की सजा सुनाई गई। अपील खारिज कर दी गई, और दोनों आदमियों को 22 मार्च 1945 को फांसी दे दी गई। ब्रिटिश अधिकारियों, जिसमें राजदूत माइल्स लैंपसन शामिल थे, ने आगे के हमलों को प्रोत्साहित करने के डर से फांसी को जल्दी अंजाम देने पर जोर दिया।

विंस्टन चर्चिल की प्रतिक्रिया

वॉल्टर गिनीज विंस्टन चर्चिल के सबसे करीबी व्यक्तिगत मित्रों और राजनीतिक सहयोगियों में से एक थे। दोनों ने “द अदर क्लब” की सह-स्थापना की और छुट्टियां साथ बिताई, जिसमें 1934 की यॉट यात्रा शामिल थी। मोयन की मौत से चर्चिल तबाह हो गए, इसे “कृतघ्नता का घुणित कार्य” कहा। 17 नवंबर 1944 को संसद में अपने संबोधन में, उन्होंने चेतावनी दी कि “हत्यारों की पिस्तौलों का धुआं” नीति निर्धारित नहीं कर सकता। उन्होंने फिलिस्तीन के विभाजन पर चर्चा के लिए निर्धारित कैबिनेट बैठक रद्द कर दी और ज़ायोनी नेताओं के प्रति स्पष्ट रूप से ठंडे हो गए, वीज़मैन के व्यक्तिगत संदेशों का जवाब देने से इनकार कर दिया। डीक्लासिफाइड पत्राचार चर्चिल के इस आग्रह को प्रकट करता है कि हत्यारों को कोई दया नहीं दी जानी चाहिए, एक स्थिति जो शोक और राजनीतिक गणना दोनों को दर्शाती है। हालांकि चर्चिल ने ज़ायोनिज़्म के प्रति अपनी व्यापक सहानुभूति नहीं छोड़ी, हत्या ने उनकी दृष्टि को स्थायी रूप से बदल दिया। इसने व्यक्तिगत मित्रता को राजनीतिक दरार में बदल दिया और मध्य पूर्व में ब्रिटेन की स्थिति के नैतिक और रणनीतिक लागतों को रेखांकित किया।

दीर्घकालिक प्रभाव और व्यापक निहितार्थ

लॉर्ड मोयन की हत्या के परिणाम तत्काल क्षण से कहीं आगे तक फैले। इसने ब्रिटेन और ज़ायोनी आंदोलन के बीच अविश्वास को गहरा किया, विभाजन के निकट प्रस्ताव को पटरी से उतार दिया, और ब्रिटेन के मंडेट छोड़ने के अंतिम निर्णय में योगदान दिया। हिंसा की बाद की वृद्धि 1947 में संयुक्त राष्ट्र विभाजन मतदान और 1948 में इज़राइल की स्थापना में समाप्त हुई। इज़राइल में, वैश्विक रूप से आतंकवादियों के रूप में निंदा किए गए हत्यारों को राष्ट्रीय मुक्ति के शहीद के रूप में पुनर्कल्पित किया गया। 1975 में, उनके अवशेषों को मिस्र से कैदियों के आदान-प्रदान में वापस लाया गया और यरूशलेम के माउंट हर्ज़ल पर पूर्ण सैन्य सम्मान के साथ फिर से दफनाया गया।

एक स्थायी छाया: ब्रिटिश-इज़राइली संबंध और शाही संबंध

लॉर्ड मोयन की हत्या की विरासत 1940 के दशक से बहुत आगे तक फैली, ब्रिटिश-इज़राइली संबंधों पर एक सूक्ष्म लेकिन स्थायी छाया डाली। इसके सबसे स्थायी प्रतीकों में से एक रानी एलिजाबेथ द्वितीय का इज़राइल से उनके सत्तर वर्षों के शासनकाल में अनुपस्थित रहना था। 120 से अधिक देशों की यात्राओं और इज़राइली नेताओं से कई निमंत्रणों के बावजूद, उन्होंने कभी आधिकारिक राज्य यात्रा नहीं की।

जबकि ब्रिटिश सरकार ने अरब सहयोगियों को अलग करने और क्षेत्र में व्यापार संबंधों को जोखिम में डालने से बचने के लिए इज़राइल में शाही यात्राओं को हतोत्साहित करने की अनौपचारिक नीति बनाए रखी, व्यक्तिगत और ऐतिहासिक कारक भी भूमिका निभाते थे। मंडेट के दौरान ब्रिटिश कर्मियों पर ज़ायोनी उग्रवादी हमलों की स्मृति—सबसे विशेष रूप से 1944 में लॉर्ड मोयन की हत्या, विंस्टन चर्चिल के करीबी मित्र—ने राजशाही और ब्रिटिश स्थापना पर स्थायी छाप छोड़ी। मोयन की हत्या, हिंसा की व्यापक अभियान का हिस्सा जिसमें 1946 का किंग डेविड होटल बम विस्फोट शामिल था जिसमें 91 लोग मारे गए (जिनमें ब्रिटिश अधिकारी और नागरिक शामिल थे), ब्रिटेन के शासक वर्गों में कई लोगों के लिए विश्वासघात और हानि की अवधि का प्रतीक था।

कुछ रिपोर्टें सुझाव देती हैं कि इन स्मृतियों ने रानी की निजी धारणाओं को आकार दिया। एक खाते में दावा किया गया कि वह मानती थी कि “हर इज़राइली या तो आतंकवादी है या आतंकवादी का बेटा”, जो दर्शाता है कि इस तरह की घटनाएं ब्रिटिश अभिजात वर्ग की एक पीढ़ी द्वारा कितनी गहराई से आंतरिक रूप से स्वीकार की गईं, जिन्होंने फिलिस्तीन में साम्राज्य के हिंसक अंत को देखा था। परिणामस्वरूप, इज़राइली अधिकारियों को बकिंघम पैलेस में व्यक्तिगत दर्शकों की शायद ही कभी अनुमति दी गई, संपर्क ज्यादातर बहुपक्षीय या औपचारिक आयोजनों तक सीमित रहे। लॉर्ड मोयन की हत्या की छाया इस प्रकार आधुनिक राजनयिक प्रोटोकॉल में फैल गई, यह दर्शाता है कि साम्राज्य के आघात दशकों तक सूक्ष्म लेकिन शक्तिशाली तरीकों से कैसे बने रह सकते हैं।

निष्कर्ष

वॉल्टर गिनीज, मोयन के पहले बैरन की हत्या एक ब्रिटिश अधिकारी की हत्या से कहीं अधिक थी—यह एक भूकंपीय घटना थी जिसने फिलिस्तीन संघर्ष की दिशा को फिर से आकार दिया और ब्रिटेन के मध्य पूर्वी साम्राज्य के विघटन को तेज किया। मोयन, एक सैनिक, राजनेता और सुधारक, प्रतिस्पर्धी राष्ट्रवादों के बीच संतुलन की तलाश करने वाले साम्राज्यवादी व्यावहारिकों की लुप्तप्राय नस्ल का प्रतिनिधित्व करते थे। उनकी मृत्यु ने एक संभावित मध्यस्थ को चुप कर दिया और सभी पक्षों पर रवैये को कठोर कर दिया।

समकालीन अंतरराष्ट्रीय मानदंडों के लेंस से देखा जाए तो, विदेशी मिट्टी पर एक उच्च-रैंकिंग विदेशी राजनयिक की हत्या को स्पष्ट रूप से आतंकवाद के रूप में वर्गीकृत किया जाएगा। आधुनिक परिभाषाएं—जैसे संयुक्त राष्ट्र और अधिकांश राष्ट्रीय सरकारों द्वारा उपयोग की जाने वाली—नीति को प्रभावित करने के लिए गैर-लड़ाकू अधिकारियों के खिलाफ जानबूझकर राजनीतिक हिंसा को आतंकवाद के रूप में पहचानती हैं, चाहे उद्देश्य या कारण कुछ भी हो। जबकि लेही ने अपने कार्यों को उपनिवेश-विरोधी प्रतिरोध के रूप में फ्रेम किया, विदेश में एक नागरिक राजनीतिक नेता को निशाना बनाना आज की आतंकवाद की अवधारणा में पूरी तरह फिट बैठता है, जो क्रांतिकारी हिंसा और नैतिक वैधता के बीच स्थायी तनाव को रेखांकित करता है।

संदर्भ

- बार्नेट, कोरेली। **द कोलैप्स ऑफ ब्रिटिश पावर**। लंदन: मेथुएन, 1972।
- बेन-येहुदा, नचमन। **पॉलिटिकल एसासिनेशनस बाय ज्यूज़: ए रेटोरिकल डिवाइस फॉर जस्टिस**। ऑल्बनी: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू यॉर्क प्रेस, 1993।
- चर्चिल, विंस्टन एस। **द सेकंड वर्ल्ड वॉर: वॉल्यूम VI - ट्रायम्फ एंड ट्रेजेडी**। लंदन: कैसल, 1954।
- कोहेन, माइकल जे। **चर्चिल एंड द ज्यूज़**। लंदन: फ्रैंक कैस, 1985।
- गिल्बर्ट, मार्टिन। **विंस्टन एस. चर्चिल: द प्रॉफ़ेट ऑफ़ टुथ (1922-1939)**। बोस्टन: हॉटन मिफ्लिन, 1977।
- हॉफमैन, ब्रूस। **एनॉनिमस सोलजर्स: द स्ट्रगल फॉर इज़राइल, 1917-1947**। न्यू यॉर्क: नॉफ, 2015।
- लुईस, विलियम रोजर। **द ब्रिटिश एम्पायर इन द मिडल ईस्ट, 1945-1951**। ऑक्सफोर्ड: क्लैरेंडन प्रेस, 1984।
- पोरथ, येहुदा। **द इमर्जेंस ऑफ़ द पालेस्टिनियन-अरब नेशनल मूवमेंट, 1918-1929**। लंदन: फ्रैंक कैस, 1974।
- शिंडलर, कॉलिन। **ए हिस्ट्री ऑफ़ मॉडर्न इज़राइल**। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2008।
- वासरस्टीन, बर्नार्ड। **द ब्रिटिश इन पालेस्टाइन: द मंडेटरी गवर्नमेंट एंड द अरब-ज्यूइश कॉन्फ्लिक्ट, 1917-1929**। ऑक्सफोर्ड: बेसिल ब्लैकवेल, 1978।
- वासरस्टीन, बर्नार्ड। **हर्बर्ट सैमुअल: ए पॉलिटिकल लाइफ़**। ऑक्सफोर्ड: क्लैरेंडन प्रेस, 1992।
- वीज़मैन, चाइम। **ट्रायल एंड एरर: द ऑटोबायोग्राफी ऑफ़ चाइम वीज़मैन**। न्यू यॉर्क: हार्पर एंड ब्रदर्स, 1949।

- विस्ट्रिच, रॉबर्ट एस। **ज़ायोनिज़्म एंड इट्स डिसकंटेंट्स: एसेज़ ऑन द ज्यूइश स्ट्रगल फॉर स्टेटहुड**। न्यू यॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2017।
- द टाइम्स (लंदन)। “द मर्डर ऑफ लॉर्ड मोयन।” संपादकीय, 8 नवंबर 1944।
- हा'आरेट्ज़। “द डेथ ऑफ लॉर्ड मोयन: कॉन्सीक्वेसेज़ फॉर ज़ायोनिज़्म।” नवंबर 1944।
- हंसाई पार्लियामेंटरी डिबेट्स। हाउस ऑफ कॉमन्स, 17 नवंबर 1944, वॉल्यूम 404।
- रॉयल आर्काइव्स। **कॉरस्पॉन्डेंस रिलेटिंग टू मिडल ईस्ट पॉलिसी एंड द एसासिनेशन ऑफ लॉर्ड मोयन, 1944-1945**। विंडसर कैसल: रॉयल आर्काइव्स कलेक्शन।
- सेगेव, टॉम। **वन पालेस्टाइन, कम्प्लीट: ज्यूज़ एंड अरब्स अंडर द ब्रिटिश मंडेट**। न्यू यॉर्क: मेट्रोपॉलिटन बुक्स, 2000।
- स्मिथ, चार्ल्स डी। **पालेस्टाइन एंड द अरब-इज़राइली कॉन्फ्लिक्ट: ए हिस्ट्री विद डॉक्यूमेंट्स**। 9वीं संस्करण। बोस्टन: बेडफोर्ड/सेंट मार्टिन्स, 2021।